श्री गजानन महाराजांचे आवडते भजन

भोलानाथ हे दिगंबर, दुख मेरा हरो रे।

चंदन चावल बेल की पतिया, शिवजी के माथे धरो रे।

अगर चंदन का भस्म चढाऊ ते , शिवजी के पैया पडो रे।

नंदी जो उपर स्वार भये रामा, मस्तकी गंगा धरो रे॥१॥

शिवशंकर को तीन नेत्र है, अद्भुत रुप धरो रे।

अर्धांग गौरी, पुत्र गजानन, चंद्रमा माथे धरो रे ॥२॥

आसन डाल सिंहासन बैठे, शांती समाधी धरो रे।

कांचन थाली कपुरे की बाती , शिवजी की आरती करो रे।

मीरा के प्रभु गिरीधर नागर, चरणो में शीश धरो रे ॥३॥

भोला नाथ हे दिगंबर, दु:ख मेरा हरो रे।